कि सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि का तेज और प्रकाश भगवान् श्रीकृष्ण से आ रहा है, तो उसमें कृष्णभावना का उन्मेष हो सकता है। चन्द्रज्योति से सम्पूर्ण वनस्पतियों का पोषण होता है। वैसे भी चन्द्रज्योत्स्ना इतनी सुखदायी है कि श्रीकृष्ण इसके स्रोत हैं, यह जानने पर लोगों को यह अनुभूति सहज रूप से हो जायगी कि वे भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा से ही जीवन-धारण कर रहे हैं। उनकी कृपा के बिना न सूर्य हो सकता है, न चन्द्र और अग्नि ही हो सकती है तथा इन सबके अभाव में कोई जीवित भी नहीं रह सकता। ये कुछ वे भाव हैं, जिनसे बद्धजीव में कृष्णभावना का उदय हो सकता है।

गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा।
पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः।।१३।।

गाम् =लोकों में; **आविश्य** =प्रवेश करके; **च** =तथा; **भूतानि** =जीवों को; **धारयामि** =धारण करता हूँ; **अहम्** =मैं; **ओजसा** =अपनी शक्ति के द्वारा; **पुष्णामि** =पोषण करता हूँ; **च** =तथा; **औषधीः** =वनस्पतियों का; **सर्वाः** =सब; **सोमः** =चन्द्रमा; **भूत्वा** = होकर; **रसात्मकः** =अमृतरसमय।

अनुवाद

मैं सम्पूर्ण लोकों में प्रवेश करके उन्हें सारे जीवों सहित अपनी शक्ति द्वारा धारण करता हूँ और अमृतमय चन्द्रमा होकर सब वनस्पतियों का पोषण करता हूँ।।१३।।

तात्पर्य

निःसन्देह सम्पूर्ण लोक श्रीभगवान् की शक्ति से ही अंतरिक्ष में भ्रमण कर रहे हैं। श्रीभगवान् का एक-एक लोक, एक-एक जीव और अणु-अणु में प्रवेश है। इस तत्त्व का निरूपण ब्रह्मसंहिता में है। उस के अनुसार श्रीभगवान् का एक अंश-प्रकाश, परमात्मा सब लोकों, ब्रह्माण्डों, जीवों, यहाँ तक कि अणुओं में भी प्रवेश करता है। उनके इस प्रकार प्रवेश करने से ही सब कुछ ठीक-ठीक प्रकाशित होता है। जब तक आत्मा देह में रहता है, तब तक ही मनुष्य तैर सकता है; आत्मा के जाते ही शरीर डूब जाता है। इसी प्रकार, ये सब लोक अंतरिक्ष में तैर रहे हैं, क्योंकि इनमें श्रीभगवान् की शक्ति का प्रवेश हुआ है। भगवत्-शक्ति के लिए ये लोक धारण करने को कुछ धूलिकणों से अधिक नहीं हैं। यदि कोई मुट्ठी में धूल उठाए, तो वह नहीं गिरेगी; परन्तु यदि उसे ऊपर उछाला जाय, तो वह अवश्य गिरेगी। अंतरिक्ष में तैरते हुए इन लोकों को वस्तुतः विश्वरूपधारी श्रीभगवान् ने अपनी मुट्ठी में पकड़ रखा है। उनकी शक्ति और सामर्थ्य से सभी चराचर पदार्थ यथास्थान बने रहते हैं। शास्त्रों में कहा है कि श्रीभगवान् के कारण ही सूर्य चमकता है और ग्रह गतिशील हैं। उनके बिना सब लोक वायु में धूलि के समान बिखर कर तत्काल नष्ट हो जाएँ। यह भी श्रीभगवान् की शक्ति का ही प्रभाव है कि चन्द्रमा वनस्पति-जगत् का अमृत से पोषण करता हुआ रस का संचार करता है। उसके बिना वनस्पतियाँ न तो बढ़ेंगी और न स्वादिष्ट होंगी।